समाज को जिन पर गर्व है-राम मन्दिर आन्दोलन के अमर बलिदानी
स्व. अमर शहीद अविनाश चितलांगिया

जन्म दिनांक-२० जून १९७३ बलिदान दिवस-६ दिसम्बर १९९२

राजस्थान में तीर्थ-राज पुष्कर के पास एक छोटा सा ग्राम है-पिचोलिया । अमर शहीद अविनाश का जन्म इसी ग्राम में माँ अक्षय माहेश्वरी की कोख से हुआ।

२० जून १९७३ को जन्म अविनाश सन् १९८२ में पिताजी श्री माणकचन्द माहेश्वरी का स्थानांतरण होने जाने से अजमेर चले आये थे। पढ़ाई में इतने तेज कि हायर-सेकेण्डरी की परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। वह अजमेर के माहेश्वरी समाज द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में बढ़-बढ़ कर भाग लेते थे। जब राम जन्मभूमि विवाद अपने चरमत्कोर्ष पर था, अविनाश काफी विचलित हो गये थे और भावुक भी।

२७ नवम्बर १९९२ की प्रातः बेला में उन्होंने पिताश्री से कार सेवक के रूप में अयोध्या जाकर मंदिर नव निर्माण में अपने योगदान की इच्छा जाहिर की। एक तो इकलौता पुत्र और दूसरा मोह का बन्धन, पिताजी टालमटोल करते रहे पर अन्त में अविनाश के संकल्प को विजयश्री मिली। २९ नवम्बर को अविनाश ने कार सेवकों के प्रथम जत्थे के साथ अयोध्या की ओर प्रस्थान किया।

६ दिसम्बर के एतिहासिक दिन रामलला की पावन जन्म भूमि में एक हुंकार हुई। उस दिन अविनाश ने अपने नायक की आज्ञा भंग कर अपने संकल्प पत्र के अनुसार मंदिर के गुम्बज पर रस्सी के सहारे चढ़ कर वहीं पर रखे पाइप के टुकड़े की सहायता से कार सेवा की।

अपरान्ह ४ बजे ध्वनि-यंत्र से घोषणा हुई कि कई लोग मलबे में दब कर घायल हो गये है। अविनाश अपने अन्य मित्रों के साथ घायलों की तलाश में मन्दिर के पास अयोध्या की टेढ़ी-मेढ़ी गलियों से गुजर रहे थे। अविनाश और उसके साथी सबसे आगे थे और पीछे लोगों का हुजूम। ठीक चार बजकर चालीस मिनट पर एक हथगोला अविनाश की ओर फेंका गया जिसे अविनाश ने थाम लिया और वापिस फेंका, हथगोला दीवार से जा टकराया और भयंकर विस्फोट हुआ। एक छर्रा अविनाश के सिर में घुस गया और अविनाश 'जय श्रीराम' के उद्घोष के साथ जमीन पर धराशायी हो गया। फैजाबाद जिला चिकित्सालय में अविनाश ने आखिरी साँस ली। अविनाश का अन्तिम संस्कार ८ दिसम्बर १९९२ को मध्याह्न १ बजकर ३० मिनट पर अजमेर में किया गया। ''अविनाश अमर रहे'' से आकाश गूँज उठा। शहीद अविनाश पर केवल समाज को नहीं नहीं बल्कि देश और सम्पूर्ण मानवता को गर्व है। उन्हें मरणोपरांत 'श्री कोठारी बन्धु शौर्य स्मृति पुरस्कार' प्रदान कर माहेश्वरी समाज स्वयं को गौरान्वित अनुभव करता है।

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।